पंजीकरण प्रपत्र

"भारतीय ज्ञान परम्परा में
श्रीमंत शंकरदेव का योगदान"

दिनांक - ४ नवम्बर, २०२३

मार्घेरिटा कॉलेज

नाम.....

पदनाम.....

विभाग.....

संस्थान.....

पत्राचार पता.....

मोबाइल नम्बर.....

ईमेल.....

शोध पत्र का विषय.....

शोध पत्र की भाषा.....

पंजीयन शुल्क का विवरण.....

राशि.....

ड्राफ्ट विवरण.....

दिनांक.....

Registration Link

http://forms.gle/kzr1qqZLwakcumXC8

पंजीकरण -

संगोष्ठी में सभी सहभागी के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। प्रतिभागियो को यह सूचित किया जा रहा है कि उन्हे केवल मानदेय का भुगतान किया जाएगा। रहने की व्यवस्था प्रतिभागियों को स्वयं करना होगा।

पंजीकरण हेतु लिंक- http://forms.gle/kzr1qqZLwakcumXC8

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पंजीकरण शुल्क

रु. १००० शिक्षक

रु ७०० शोधार्थी

रु १०० छात्र-छात्राओं

शोध-सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथिः ३० सितम्बर, २०२३

(३०० शब्दों में)

पूर्ण शोध-पत्र प्रेषित करने की अंतिम तिथिः १५ अक्टूबर, २०२३

शोध-पत्र सारांश प्रेषित करने हेतु ई-मेल-
sangosthisankardeva@gmail.com

नोटः छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थी अपने विभागाध्यक्ष प्राचार्य शोध निर्देशक से संस्तुति-पत्र की प्रमाणित प्रति एवं परिचय पत्र जमा करके सम्बन्धित लाभ ले सकते है। पंजीकरण शुल्क नकद/डिमांड ड्राफ्ट/ऑनलाईन माध्यम से निम्न विवरणानुसार जमा किए जा सकते है।

बैंक खाता विवरण-

Margherita College (ICSSR-0877)

Punjab National Bank, Dirak Branch	
Account Number	0960010221856
IFSC Code	PUNB0096020

हिन्दी, विभाग मार्घेरिटा महाविद्यालय
एवं
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारतीय ज्ञान परम्परा में
श्रीमंत शंकरदेव का योगदान"

तिथिः - ०४.११.२०२३

संरक्षक

डॉ. अतनु काकति

प्राचार्य, मार्घेरिटा महाविद्यालय

समन्वयक : **डॉ पुष्पा सिंह**
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
सचल नं- 8299425535

संयोजक : **डॉ मृणाली कुँवर**
सह प्राध्यापक हिन्दी विभाग
सचल नं- 9435003092

मार्घेरिटा महाविद्यालय के संदर्भ में

सन् 1978 में स्थापित मार्घेरिटा महाविद्यालय अपने स्वच्छ सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। पाटकाई पहाड़ों से घिरा मार्घेरिटा महाविद्यालय 26 बीघा जमीन पर निर्मित है। महाविद्यालय अपने प्रारंभिक काल से ही कला एवं वाणिज्य की शिक्षा प्रदान करते हुए विद्यार्थियों को स्वावलंबन हेतु दिशा निर्देश करता हुआ, उत्तम परिणाम के साथ अग्रसर है। 1998 में यहां विज्ञान शाखा का भी संयोजन किया गया । जबकि मार्घेरिटा अरुणाचल की सीमा से सटा हुआ अंचल है। इस कारण महाविद्यालय में असम सहित अरुणालचल की विभिन्न जाति-जनजाति एवं जनगोष्ठियों को शिक्षा ग्रहण करने में शुअवसर प्राप्त होता है।

संगोष्ठी के विषय में

यदि यह कहें कि भारतीय संत एवं सामाजिक सुधारकों में महापुरुष शंकरदेव का स्थान अग्रीम पंक्तियों में गण्य है, अतिशयोक्ति न होगी। तद् युगीन समाज की राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विषमताओं के मध्य भी बिखरी उई जनशक्तिय को एक सूत्र में पिरोकर नववैष्णव धर्म परम्परा की धार से प्लावित कर कृष्ण-भक्ति से सिक्त कर देना श्रीमंत शंकरदेव के असीमीत ज्ञान का सूचक है।

शंकरदेव असम तथा नीललोहित के अद्वितीय रत्न थे। शिरोमणि भुईया, संत भक्त, समाज-सुधारक धर्म गुरु, आचार्य और अंततः कवि शंकरदेव का जन्म और कार्यक्षेत्र असम था, पर पुण्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत। उनकी वाणी केवल असम और भारतवर्ष के लिए ही नहीं, विश्वमानवता के लिए उपयोगी है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन में उत्पन्न हुई अनेक विचार-धाराओं की सिद्धान्त-सार-मंदाकिनी ने उनके साहित्य सागर को लबालब भर दिया। उत्तर मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन केवल धार्मिक आध्यात्मिक आन्दोलन नहीं था। वह देश का ऐहिक उत्थान का नव्य विधान था। इस नव्य विधान में कृष्णभक्ति को नवीन स्फूर्ति से मण्डित करने का श्रेय मिलेगा श्रीमंत शंकरदेव आचार्य वल्लभ और चैतन्य को। ऐसी स्थिति में कहना नहीं होगा कि , ऐतिहासिक दृष्टि से कृष्ण भक्ति को काव्य, संगीत और नाटकों के माध्यम से वक्तव्य बनाने की प्रथम गौरवास्पद अभिधा हैं शंकरदेव।

शंकरदेव शांकर अद्वैत के काव्यात्मक संस्कार है एकशरणिया मत के प्रतिष्ठापक, व्याख्याता और कवि प्रवक्ता है। उनका वक्तव्य तत्कालीन असम-समाज की अंतरंग चेतना का कुशल शिल्पी बना, दर्पण मात्र नहीं। भारत के सुदीर्घ भ्रमण से शंकरदेव को उसकी सांस्कृतिक एकत्मकता का अनुभव हुआ था। उसे उन्होने भली भांति हृदयंगम किया। इसी कारण वे इस निष्कर्ष पर आए कि राष्ट्रीय जीवन की आत्मा राजनीति नहीं संस्कृति है। भारतीय जीवन को विराट और महान बनाने वाली संस्कृति एवं उसके अनेक में एकत्व की पहचान यदि व्यक्ति को हो जाए तो राजनीति ही नही, राष्ट्रीय जीवन का प्रत्येक अंग व्यवस्थित हो जाएगा। इसलिए वे सुख-दुख, स्तुति-निंदा की रंचमात्र चिन्ता किए बिना ही सत्य का निरन्तर
उद्घोष और एकशरण के आचारों का पालन करते थे।

उपविषय-

भारतीय सांस्कृतिक जागरण और श्रीमंत शंकरदेव
सत्र परम्परा के जनक शंकरदेव
भारतीय ज्ञान परम्परा का संदर्भ
नाट्य परम्परा में श्रीमंत शंकरदेव का योगदान
एकशरण नाम धर्म के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव
सत्र एवं एकशरणिया नाम धर्म की वैज्ञानिकता
शिल्प कला में शंकरदेव का योगदान
असम के लोकनायक श्रीमंत शंकरेदव
सामाजिक समन्वय के पुरोधा श्रीमंत शंकरदेव
शंकरदेव का दर्शन
शंकरदेव का काव्य-सौष्ठव
शंकरदेव के साहित्य में नारी
असम मे नाट्य परम्परा में शकरदेव का योगदान
सामाजिक गठन में नामघर की भूमिका
नव वैष्णवधर्म एवं श्रीमंत शंकरदेव
जातीय जागरण में नववैष्णव धर्म की भूमिका
असम में भारतीय परम्पार के संवाहक श्रीमंत शंकरदेव
विषय को केन्द्र में रखते हुए किसी भी विषय पर आलेख भेज सकते हैं

आवागमन हेतु विशेष सूचनाएं-

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मार्घेरिटा महाविद्यालय की दूरी राष्ट्रीय राजमार्ग ३८ से लगभग ५० मिटर की दूरी पर अवस्थित है। यह शहर रेल मार्ग, सड़क और हवाई मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा होने के कारण आवागमन में कोई असुविधा नहीं होगी। मोहनबाड़ी (डिब्रुगढ़) हवाइ अड्डा की दूरी यहाँ से ९० किलोमिटर है। निकटतम मार्घेरिटा रेलवे स्टेशन महाविद्यालय से २ किलोमिटर की दूरी पर अवस्थित है. जबकि निकटतम तिनसुकिया जंक्शन की दूरी यहाँ से ५० किलोमिटर है। यह अंचल देश के विभिन्न हिस्सों से जुड़ा हुआ है - राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली और तिनसुकीया के बीच चलती है, इसके अलावा अमृतसर बैंगलोर, चैन्नई कलकत्ता, पटना आदि के लिए लम्बी दूरी की रेल भी तिनसुकिया से होकर चलती है।

शोध सारांश/शोध पत्र/आलेख प्रेषण -

चयनित शोधपत्रों, आलेखों को आई. एस. बी. एन. युक्त पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। उक्त संगोष्ठी में पंजीकरण, सारांश को प्रेषित करने की अंतिम तिथि ३० सितम्बर, २०२३ निर्धारित है।

प्रतिभागी अपना शोध-पत्र हिन्दी, असमीया, बंगला और अंग्रेजी भाषा में भेज सकते हैं। शोध सारांश अथवा शोध-पत्र मंगल युनिकोड रोदाली वर्ड फाइल फाँट साइज १२ एम. एस वर्ड फाइल सहित पीडीएफ फाइल के रूप में प्रेषित करें तथा अपने मित्रों, सहयोगियों तथा शोधार्थियों को भी सहभागिता हेतु प्रेषित करें।

शोध-पत्र सारांश प्रेषित करने हेतु ई-मेल-
sangosthisankardeva@gmail.com